हिन्दी गद्य निर्माण

सम्पादक

लक्ष्मीधर वाजपेयी

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

प्रयाग

મુન દાશ્રી, નિર્મળાશ્રી તથા પદ્મયશાશ્રી
卐 ચિત્કોશ. 卐
શાનમાંનીપોળ - આંબળીયા - ખાચો,
પુસ્તક નંબર

२००५

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

सप्तम संस्करण :—२००० : मूल्य २)

मुद्रक—जगतनारायणलाल, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग

प्रकाशकीय

इस गद्य-संग्रह का यह सप्तम संस्करण है। यह संग्रह विद्वान् संग्रह कर्त्ता ने हिन्दी गद्य शैली के वैज्ञानिक विकास के आधार पर किया था। मध्यमा के विद्यार्थियों के लिए शैली और भाषा के विचार से यह संग्रह कितना मान्य हुआ यह तो इसके इतने संस्करणों से ही सिद्ध हो जाता है। अगले संस्करण में आवश्यक परिवर्त्तन और परिवर्धन से हम इसे और भी उपयोगी और वैज्ञानिक बनाने का यत्न करेंगे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग

साहित्य मन्त्री

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—प्राक्कथन	...	...	७-१४
२—भूमिका	...	...	१५-४२
३—राजा भोज का सपना—राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द	...	....	४३
४—कश्मीर—राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द	..		५७
५—शकुन्तला नाटक—राजा लक्ष्मणसिंह	...		६४
६—वैष्णवता और भारतवर्ष—भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र	...		७८
७—साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है—पं० बालकृष्ण भट्ट			८६
८—शिवमूर्ति—पं० प्रतापनारायण मिश्र	...		६८
६—हिन्दी भाषा का विकास—उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	...	...	१०७
१०—मेले का ऊँट - बाबू बालमुकुन्द गुप्त	...		११६
११—आजकल के छायावादी कवि और कविता—आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी	...		११६
१२—रामलीला—पं० माधवप्रसाद मिश्र	...		१३१
१३—मजदूरी और प्रेम—अध्यापक पूर्णसिंह जी	...		१३६
१४—हिन्दी में भावव्यंजकता—पं० श्यामविहारी मिश्र एम० ए० और पंडित शुकदेव विहारी मिश्र, बी० ए०	...		१५४
१५—भारतीय साहित्य की विशेषताएँ—बाबू श्यामसुन्दर दास			१५८
१६—श्रीबाणभट्ट—प० पद्मसिंह शर्मा	...		१६५
१७—साहित्य का स्वरूप—पं० रामचन्द्र शुक्ल	...		१७२
१८—भीष्माष्टमी—बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन	...		१७७

विषय		पृष्ठ
१६—साहित्योपासक—श्री प्रेमचन्द जी	...	१८४
२०—समाधान—बाबू जयशंकर प्रसाद	...	१६७
२१—विश्वप्रेमी कवि—पं० बदरीनाथ भट्ट	...	२०२
२२—अन्तःपुर का आरम्भ—राय कृष्णदासजी	...	२०६
२३—दीनों पर प्रेम—श्रीवियोगी हरि जी	...	२०६
२४—मुण्डमाल—बाबू शिवपूजन सहाय	...	२१३
२५—अवतार—पाडेय बेचन शर्मा उग्र'	...	२१६
२६—साहित्य और सौन्दर्य-प्रदर्शन—लक्ष्मीधर वाजपेयी		२२६

प्राक्कथन

आधुनिक हिन्दी गद्य के निर्माण का प्रारम्भ सच पूछिये तो राजा शिव-प्रसाद सितारे हिन्द के समय से ही होता है। यह सच है कि स्वयं राजा साहब हिन्दी गद्य का कोई निश्चित स्वरूप स्थिर नहीं कर सके; क्योंकि प्रान्तीय शिक्षा विभाग के उच्च पदाधिकारी होने के कारण उस समय उनको हिन्दी उर्दू के समझौते का मार्ग स्वीकार करना पड़ा—किसी प्रकार से भी हो, नागरी लिपि और हिन्दी भाषा, शिक्षा-विभाग के द्वारा, सर्वसाधारण जनता में अपना घर कर लेवे, यही उनका लक्ष्य था—इसके लिए उन्होंने पूर्ण प्रयत्न किया, और सफल भी हुए।

हिन्दी के विशुद्ध रूप के कई पक्षपाती उक्त राजा साहब के समय में ही उत्पन्न हो चुके थे; और इन विद्वानों ने अपनी लेखनी द्वारा, तथा अन्य प्रकार से भी, हिन्दी गद्य को अच्छा स्वरूप दिया, जिसको भारतेन्दु जी ने स्थिर-स्थायी बना दिया। सौभाग्य से भारतेन्दु-काल में बहुत अच्छे-अच्छे गद्य-लेखक हिन्दी-संसार में मौजूद थे, और उन्होंने अपने इस साहित्यिक नेता का साथ दिया; और हिन्दी-गद्य को अपने त्याग और अपने तप से इस दर्जे तक पहुँचाया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बाद आचार्य द्विवेदी जी का, वर्तमान हिन्दी-गद्य-निर्माण मे बहुत बड़ा हाथ है। क्योंकि भारतेन्दु-काल के गद्य-लेखकों की रचना देखने से स्पष्ट मालूम होता है कि उनको व्याकरण के नियमों की उतनी परवा नहीं थी, जितनी अपने लिखने की धुन की! अपने मन का साहित्य तैयार करना उनका प्रधान लक्ष्य था—शैली अपनी थी ही। स्वयं भारतेन्दु जी ने तो अपनी रचना में अपनी परिमार्जित शैली का काफी ध्यान रक्खा है; और उनकी रचना में व्याकरण के अशुद्ध प्रयोग भी उतने नहीं पाये जाते; परन्तु उनके समसामयिक कई गद्यकार प्रायः अपनी धुन में ही मस्त थे। वे भारतेन्दु को नेता मानते हुए भी अपनी लहर में ही चलते थे, और यह उनका व्यक्तित्व था, जिस पर उनकी भाषा-शैली खड़ी है। इनकी गद्य रचना में व्याकरण के नियमों की अवहेलना स्पष्ट दिखाई देती है। इसमें

सन्देह नहीं कि इन लेखकों की भाषा-शैली में व्यंग्य के साथ-साथ विनोद की बहुत अच्छी कला है; और शब्दों तथा वाक्यों से हार्दिक भाव प्रदर्शन की क्षमता भी काफी मात्रा में है, परन्तु रचना का बीहड़पन और ग्रामीणता भी कहीं-कहीं प्रदर्शित होती है। अस्तु।

भारतेन्दु जी के बाद द्विवेदी जी का ही ध्यान भाषा शैली के परिमार्जन की ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने हरिश्चन्द्र-काल की शैली में भाषा और व्याकरण सम्बन्धी भूलों का परिमार्जन किया। स्वयं कई प्रकार की टकसाली हिन्दी लिखी, और "सरस्वती" के सम्पादन के द्वारा सैकड़ों नवीन और प्राचीन गद्य-लेखकों का विशुद्ध हिन्दी लिखने का मार्ग प्रदर्शित किया। समालोचना के द्वारा, हिन्दी-संसार में, व्याकरण-विशुद्ध भाषा लिखने के कई बड़े-बड़े आन्दोलन उठाये। आलोचनापूर्ण व्यंगात्मक शैली, अखबारों के प्रयोग में आनेवाली चलती हुई भाषा शैली, विवेचनात्मक तर्कपूर्ण शैली और काव्योपयोगी अलकारात्मक भावपूर्ण शैली, इत्यादि कई प्रकार की भाषा आचार्य द्विवेदी जी ने स्वयं लिखी; और इस प्रकार के कई लेखकों को प्रोत्साहित भी किया।

द्विवेदी जी के भाषा-सम्बन्धी आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि हिन्दी गद्य-शैली का परिमार्जित सुन्दर स्वरूप निखर और बिखर उठा। भाषा में एक प्रकार की संघटनात्मक व्यापकता का समावेश हो गया। विवेचनात्मक तर्क-पूर्ण शैली और उद्गारात्मक भावपूर्ण शैली—इन दोनों शैलियों के स्वतंत्र स्वरूप हिन्दी लेखकों के सामने आगये। फलतः वर्तमान समय के सैकड़ों हिन्दी लेखक, अपनी-अपनी वैयक्तिक विशेषताओं के साथ, अपनी-अपनी स्वतंत्र शैलियों में हिन्दी-गद्य-निर्माण का कार्य करने लगे।

इस प्रकार वर्तमान समय में हिन्दी की गद्य शैली का विकास हुआ। अवश्य परन्तु फिर भी ऐसे बहुत ही कम लेखक पाये जाते हैं जिनका गद्य पढ़ने में हमको आनन्द आता है। और गद्य लिखना है भी बहुत कठिन। शायद इसी लिए हमारे पूर्वाचार्यों ने गद्य को कवियों की कसौटी माना है।